शेख़ फ़रीद – सबद ११४
पहिलै पहरै फुलड़ा फलु भी पछा राति ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८४

पहिलै पहरै फुलड़ा फलु भी पछा राति ॥
जो जागंन्हि लहंनि से साई कंनो दाति ॥११२॥

सार: ज्ञान आरंभ में एक कली की तरह होता है, संभावनाओं से भरपूर, लेकिन आंतरिक पोषण के लिए अभी तैयार नहीं। यह प्रारंभिक समझ चिंतन, धैर्य और अनुभव के माध्यम से विकसित होती है और अंततः परिपक्व होकर विवेक का रूप ले लेती है। केवल तभी हम अपनी अंतर्दृष्टि के फलों को प्राप्त कर पाते हैं जिससे हम अपनी पूर्व-निर्धारित सोच और ऊपरी दिखावे से परे देख पाते हैं। इसलिए, आध्यात्मिक समृद्धि का अर्थ केवल ज्ञान अर्जित करना ही नहीं है बल्कि यह विवेक को जीवन जीने के ऐसे रूप में विकसित होने देना है जो हमें और दूसरों को, पोषित और उन्नत करे।

पहिलै पहरै फुलड़ा फलु भी पछा राति ॥
रात के पहले पहर में फूल खिलते हैं और बाद के समय तक, उनमें फल लगने लगते हैं। यह प्रतीक है कि आध्यात्मिक रूप से समृद्ध अंतर्दृष्टि पाने के लिए, सबसे पहले ज्ञान का खिलना ज़रूरी है।

जो जागंन्हि लहंनि से साई कंनो दाति ॥११२॥
जो लोग जागृत और सचेत रहते हैं, उन्हें अपनी अंतरात्मा से गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है। इसका अर्थ यह है कि आध्यात्मिक पोषण केवल उन्हीं लोगों को मिलता है जो सचेत, ग्रहणशील और विनम्र होते हैं। (११२)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद फूल से फल तक की यात्रा को आंतरिक विकास के रूपक के तौर पर इस्तेमाल करते हैं, यह दर्शाते हुए कि यह परिवर्तन विभिन्न चरणों में घटित होता है। फूल संभावना का प्रतीक है, चेतना के प्रारंभिक स्वरुप का, जबकि फल उस आध्यात्मिक परिपक्वता का प्रतिनिधित्व करता है

जो अंतरात्मा का पोषण करती है। यह इस महत्वपूर्ण सत्य को उजागर करता है कि अर्थ शुरुआत में पूर्ण नहीं होता बल्कि हमारी पहचान, अंततः इससे होती है कि हम क्या बनते हैं। यह परिवर्तनकारी प्रक्रिया पूर्णता की उस फलदायी अवस्था को दर्शाती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com